साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

सुषम बेदी के रचनात्मक वैविध्य में प्रवासियों की अलगाव व्यथा

डॉ॰ किरण ग्रोवर

एसो.प्रो.,स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग ,डी. ए. वी. कॉलेज, अबोहर।

चलभाष–94783–20028

personal-groverkirank@gmail.com

professional- kirangrover@davcollegeabohar.com

सारांशः–मनुष्य अपनी धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक व अनुभवातीत जड़ों से कट गया है। इस निराकार संसार से मानव का रागात्मक सम्बन्ध विकसित नहीं हो रहा, इस असमर्थता से अलगाव बोध पनपता है। अलगाव सामाजिक सम्बन्धों के सारतत्व को उद्घाटित करने के लिए उपयोगी घटक है। प्रवासी साहित्यकारों ने प्रवास का संताप भोग रहे लोगों की मानसिक और भावात्मक अवस्था को सुरक्षा प्रदान करने का प्रयास किया है। सुषम बेदी हिन्दी साहित्य लेखन में एक जानी पहचानी लेखिका हैं जिनके जीवन में परम्परा और परिवर्तन का विशेष महत्व रहा है। सुषम बेदी जी ने विदेश में रहते हुए दो संस्कृतियों की टकराहट को बहुत करीब से देखा है और महसूस किया है। लेखिका अपने व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा नैतिक मूल्यों की टकराहट अभिव्यक्त करती हुई रचनात्मक वैविध्य को व्यापक आयाम प्रदान करती है। सुषम बेदी अपने कथा साहित्य में आधुनिक जीवन के समझौते की यंत्रणा, व्यावसायिकता, स्वत्व चेतना तथा अहममन्यता आदि के प्रभुत्व के कारण संबंधों में क्षीण होती आत्मीयता तथा उभरते तनाव एवं अलगाव का पीड़ा बोध, नवीन संस्कृति की छाया से प्रभावित, देह की राजनीति बनते प्रेम–संबंध नारी जीवन में नए और पुराने मूल्यों के द्वन्द्व से उत्पन्न दोहरे संघर्ष में जकड़ी नैतिकता तथा भ्रष्टाचार की विद्रूप कुत्सित विकृत्तियों, मूल्य द्वन्द्व और मूल्य ह्रास को आदि को साथ–साथ उजागर करती चलती हैं। प्रवासी भारतीयों में

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

सांस्कृतिक अलगाव के साथ–साथ सामाजिक सम्बन्धगत अलगाव यथा पारिवारिक विघटन, पुरातन मान्यताओं का खण्डन, सम्बन्धों की जटिलता, उतरदायित्वहीनता की स्थिति, परम्परागत मूल्यों का नकार, सम्बन्धों के प्रति लाचारी, पीढ़ीगत अंतर, जीने की विवशता, प्रेम सम्बन्धों में उत्पन्न अलगाव का सूक्ष्म एवं जटिल रूप सुषम बेदी के कथा–साहित्य यथा हवन, मोरचे, लौटना, नवाभूम की रसकथा, चिड़िया और चील आदि में उभरा है।

बीज शब्दः–सांस्कृतिक विरक्ति, मूल्य क्षरण, रागात्मक सम्बन्ध, प्रतिमानहीनता, अलगाव ग्रस्तता।

मूल प्रतिपादनः–प्रथम विश्व युद्ध के बाद उपजी मानसिकता में जिन परिभाषाओं ने जन्म लिया उनमें अलगाव मुख्य है। अलगाव सामाजिक सम्बन्धों के सारतत्व को उद्घाटित करने के लिए उपयोगी घटक है। मूल्य क्षरण,सांस्कृतिक विरक्ति अलगाव के मुख्य कारण हैं। मानव सम्बन्ध की टूटन, विघटन,श्रमगत अलगाव के कारण भौतिक, सामाजिक, आर्थिक और वैयक्तिक स्तर पर अलगाव ग्रस्त होता है। आधुनिक विज्ञान, औद्योगिक सभ्यता, तकनीकी विकास ने आज के आदमी को अजनबी बना दिया है तथा परम्परा और अतीत से विच्छिन्न होने के कारण उसमें परायापन विकसित हुआ है। मनुष्य अपनी धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक व अनुभवातीत जड़ों से कट गया है। विज्ञान व मनोविज्ञान के बढ़ते हुए चरणों ने धर्म और नीति के परम्परागत विचारों को कमज़ोर बना दिया है। मशीनीकरण व यांत्रिक सभ्यता ने मनुष्य व उसके जगत के बीच गहन अलगाव पैदा किया है। आधुनिक मानव एक ओर चांद पर सैर कर रहा है व दूसरी ओर उसका संसार से सम्बन्ध टूट रहा है। सम्पूर्ण विश्व से परिचित होना चाहता है पर अपने पड़ोसी से अपरिचित है। पारम्परिक रिश्ते–नाते मनुष्य के लिए अर्थहीन हो गये हैं। मशीनीकरण, प्रतिस्पर्धा, भीषण भाग–दौड़ में संसार उसके लिए आकृतिहीन हो गया है। इस निराकार संसार से मानव का रागात्मक सम्बन्ध विकसित नहीं हो रहा, इस असमर्थता से अलगाव बोध पनपता है।

अलगाव की भावना आधुनिक समाज की बहुमुखी अवधारणा है। अलगाव जटिल अवधारणा के रूप में आधुनिक युग की समस्या बन चुकी है। अलगाव शब्द अंग्रेज़ी भाषा के Alienation का पर्याय माना जाता है जिसकी व्युत्पति लैटिन भाषा के Alienatio से हुई है, जिसका कानूनी व चिकित्सागत अर्थ ग्रहण किया जाता है। कतिपय दार्शनिकों,समाज शास्त्रियों ,राजनीतिज्ञों, विधिविशेषज्ञों व मनोवैज्ञानिकों ने अलगााव का प्रयोग अकेलापन, अजनबीपन, सामाजिक सम्बन्धों में बिखराव, एकाकीपन, आत्मनिर्वासन, परायापन, कुण्ठा, निराशा, संत्रास, विरक्ति, विमुखता, उदासीनता, पार्थक्य, स्वत्व से विलयन आदि के सन्दर्भों में किया है। अलगााव के सम्बन्ध में डॉ बैज नाथ सिंघल जी ने लिखा है कि 'व्यक्ति के वैयक्तिक, सामाजिक, व्यवस्थागत जीवन के, रहन–सहन के, स्थितियों व परिस्थितियों एवम् मनःस्थितियों के चिन्तन

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

मनन के स्तरों पर जितनी भी तरह की क्रियाएं–प्रतिक्रियाएं, घात प्रतिघात हो सकते हैं–उन सभी में अलगाव बोध किसी न किसी रूप अथवा स्तर पर विद्यमान रहता है।'[1]अलगाव जीवन के भीतर व बाहर के भौतिक और मानसिक जीवन की एक ऐसी स्थिति का विचार है जिससे व्यक्ति टकराहट में कभी जीवन को ढोता व कभी जीता प्रतीत होता है। सार्त्र ने अपनी रचना 'बींग एण्ड नथिंगनैस' में अलगाव को व्यक्ति के किसी दूसरे व्यक्ति के हस्त़क्षेप के कारण वस्तु रूप में व्याख्यायित किया है।[2] सार्त्र के चिन्तन का प्रभाव समूचे विश्व साहित्य पर पड़ा है। दार्शनिक कामू ने अपनी रचना 'द मिथ ऑफ सिसिफस' में विसंगतियों के संसार में अभिशप्त अकेले और एकाकी मनुष्य की व्यथा को चित्रित किया है।[3] अस्तित्ववादी दार्शनिकों जैस्पर्स, मार्सल, हैडगर, नीत्शे, रिल्के आदि ने हताशा, संत्रास, मृत्यु–बोध, एकाकीपन, निरर्थकता आदि को अलगाव की स्थिति में समेटा गया है।[4]

अलगाव मानस की मनोवैज्ञानिक दशा की परिचायक अवधारणा है जिसमें मनुष्य का उसके सामाजिक अस्तित्व के मुख्य पक्षों से विसर्जन हो जाता है। इस अवधारणा का प्रयोग प्रजातिक पूर्वाग्रह, मानसिक बीमारी, वर्ग चेतना, औद्योगिक तनाव, अतिवादिता आदि समस्याओं की व्याख्या में किया गया है। अलगाव में शक्तिहीनता, प्रतिमानहीनता, पृथक्ता, मानकशून्यता, आत्म–विलगाव, अवैयक्तीकरण जैसी प्रक्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है। आधुनिक मनुष्य की मानसिकता जटिलता का परिचायक होने के साथ–साथ यह उसके विसंगत व निरर्थक जीवन का बोध करवाने में समर्थ है। मनुष्य के सामान्य जीवन और उसकी मानसिकता में उत्पन्न दरार के कारणों और समाधानों से जुड़े होने के कारण सभी दर्शन समस्या के रूप में अलगाव पर विचार विमर्श करते हैं।[5] समाज की उलझनों के बीच सबसे बड़ी दारुण स्थिति परस्पर सम्बन्धों में पड़ने वाली गांठ है, एक अलगाव है, एक अजनबीपन की स्थितियां जहां मनुष्य न सिर्फ समाज से कट जाता है बल्कि स्वयं से कटने के लिए विवश हो जाता है।1अलगाव विशिष्ट अर्थ में सांस्कृतिक ढांचें में उत्पन्न गतिरोध के लिए प्रयुक्त होता है। आज दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, समाजशास्त्रियों ने अलगाव शब्द का प्रयोग आत्मविश्वास खोने, सामाजिक सम्बन्धों के बिखराव,एकाकीपन, परायापन, अविश्वास आदि के सन्दर्भ में किया है।

1947 के देश विभाजन के बाद जो मारकाट हुई और जिस प्रकार लोग विस्थापित हुए,लोगों के मन से उस भीषण अनुभव की याद गई नहीं, उसी प्रकार बंगाल का अकाल, द्वितीय विश्व युद्ध,साम्प्रदायिकता,अंग्रेज़ी सत्ता का अन्त, कांग्रेस द्वारा हस्तांरण आदि ऐसी घटनाएँ हैं जिन्होंने भारतीय जन चेतना को झकझोर दिया है। अलगााव की अनुभूति के कारण मनुष्य स्व को विरक्त अनुभव करने लगता है जिसकी परिणति मुख्य रूप में असन्तोष में होती है। अलगाव बोध से पीड़ित मानव अपने आप को असुरक्षित, आतंकित व भयभीत महसूस करता हुआ

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

अस्मिता के खो जाने पर मृत्यु बोध का शिकार बन जाता है। अलगाव बोध के विविध आयाम व दिशाएं हैं, इस अलगाव चिन्तन ने इतिहास क्रम में लम्बी यात्रा तय की है।[6] यह स्थिति मनुष्य की मनुष्यता को छीनती जा रही है। उसके भीतर रागात्मक सम्बन्धों को विनष्ट कर रही है। ऐसी स्थिति में संवेदनशील साहित्यकार के मन में मनुष्य के भविष्य के सम्बन्ध में शंका पैदा होना स्वाभाविक है। इस प्रकार वे अपनी रचनाओं में मनुष्य के अजनबी, निर्वासित एवम् अकेले होने की अवस्था का चित्रण करने लगे।

आज साहित्य सृजन प्रवासियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। भिन्न–भिन्न देशों में रचा जा रहा प्रवासी साहित्य भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के अंतर्गत अपने तौर पर विलक्षण है परन्तु इनमें कुछ विशेषताएं एक जैसी हैं जैसे नस्लवाद, सांस्कृतिक तनाव, रिश्तों की सार्थकता और बेगानापन आदि। जिन भारतीय प्रवासी साहित्यकारों ने अभिव्यक्ति द्वारा अपने भावों को व्यक्त किया वे अधिकतर इंगलैंड और कैनेडा के प्रवासी थे। इनके अतिरिक्त अमेरिका,नीदरलैंड, डेनमार्क, कीनिया, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, स्वीडन, जिंबाबवे, डुबई, मसकट, थाईलैंड आदि देशों में रह रहे भारतीयों ने भी प्रवासी चेतना के स्वर को अभिव्यक्त करते हुए भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के अन्तर्गत प्रवास का संताप भोग रहे लोगों को मानसिक और भावात्मक सुरक्षा प्रदान करने का प्रयत्न किया।

सुषम बेदी हिन्दी साहित्य लेखन में एक जानी पहचानी लेखिका हैं। बाल्यावस्था से ही सुषम बेदी के मन में बड़ी–बड़ी कल्पनायें अंगड़ाईयाँ लेती थीं। वह अपनी दिनचर्या में जीवन के एक–एक पल को जिंदादिली से यापित करती थी। उन्होंने अपनी आत्मकथा में लिखा है, ''बस यही इंतजार कि कब बड़े होंगे, कब अपने पैरों पर खड़े होंगे और यूँ ही अकेले निकल पड़ेंगे दुनिया के अनजाने फैलाव में। पर हर दिन वही लंबा सा दिन चढ़ निकलता। स्कूल, स्कूल से घर और फिर सीधे मैदान में या सहेलियों के घर निकल जाना।''पंजाब में पैदा होने और पंजाबी होने के कारण पंजाब से इन्हें गहरा लगाव रहा। सुषम बेदी ने कॉलेज की पढ़ाई करते हुए दिल्ली महानगर में रहते हुए रेडियो प्रोग्राम, टेलीविजन प्रोग्राम, कॉलेज, सहेलियाँ, रिश्तेदार, कैफे, कनॉट पलेस और करौल बाग की सैर, बसों में आना जाना, कहानी प्रतियोगिताओं में भाग लेना, पत्रिकाओं के लिए लिखना और पत्रकारिता सब कुछ किया। इनके व्यक्तित्व में कला और संगीत का सुंदर समन्वय प्रतिबिम्बित होता है। एक ओर लेखन और दूसरी ओर संगीत अर्थात एक ओर भाव तो दूसरी ओर कला, ये सुमेल बहुत ही कम लेखिकाओं में देखने को मिलता है। आदर्शों का शिलान्यास सुषम बेदी के व्यक्तित्व पर बचपन से ही पड़ गया था। इनके जीवन में परम्परा और परिवर्तन का विशेष महत्व रहा है।जीवन का आधार परिर्वतन मानकर 'बदलाव' नामक शीर्षक से एक कविता भी लिखी।

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

सुषम बेदी जी ने अनेक देशों का भ्रमण किया जैसे यूरोप, दक्षिणी अफ्रीका, एशिया,आस्ट्रेलिया। दुनिया के हर कोने को देखने और जानने की इच्छा ने ही इन्हें इन देशों की सैर करवाई। इतने देशों में भ्रमण के पश्चात इन्हें इंगलैंड सबसे ज्यादा पसंद आया। विदेशों में बसे भारतीयों की द्वन्द्वमय मनः स्थितियों को कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से अभिव्यक्त करने में सुषम बेदी का हिन्दी साहित्य को विशेष योगदान है। अमेरिका जाने के बाद भी सुषम बेदी इस विषय से मुक्त नहीं हो सकीं। ये बातें उन्हें अकसर भीतर तक झकझोर देती हैं। उन्होंने विदेश में भी इस बात को महसूस किया कि विदेश में प्रवासियों ने अपने–अपने ढंग से परम्परागत मूल्यों और विश्वासों के बदलाव को झेला, विरोध किया और अंत में उन्हें स्वीकार कर समझौता कर लिया। सुषम बेदी जी ने विदेश में रहते हुए दो संस्कृतियों की टकराहट को बहुत करीब से देखा है और महसूस किया है। न्यूयार्क में वे अपने जीवन से संतुष्ट थीं और मनचाहे माहौल में लेखन, नौकरी, घर–परिवार और बहुत कुछ करने का अवसर मिला। इनके मन के भाव कागजों पर उतरते चले गए।[7] इनके आज तक सात उपन्यास–'हवन', 'लौटना', 'इतर,' 'गाथा अमरबेल की', 'नवाभूम की रस कथा', 'कतरा–दर–कतरा', 'मोरचे' और एक कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील' भी प्रकाशित हो चुका हैं। 'हवन' उपन्यास साहित्यक पत्रिका 'गंगा' में धारावाहिक के रूप में प्रकाशित होने के बाद 1989 में 'पराग प्रकाशन' से प्रकाशित हुआ । 1992 में 'हवन' का अनुवाद उर्दू में पाकिस्तान से और अंग्रेजी अनुवाद 'The Fire Sacrifice' के नाम से प्रकाशित हुआ। 'लौटना' उपन्यास 1994 में 'पराग प्रकाशन' से प्रकाशित हुआ । इस उपन्यास का अंग्रेजी अनुवाद 'Return' और उर्दू अनुवाद (वापसी) में हुआ। 'इतर' उपन्यास 1995 में 'नेशनल पब्लिशिंग हाउस' दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास 'संडे मेल' नामक एक पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ । इसका अंग्रेजी अनुवाद 'Other' के नाम से हुआ। 'कतरा दर कतरा' उपन्यास सन ् 1994 में अभिषेक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित है। इसका अंग्रेजी अनुवाद 'Drop by Drop' के नाम से हुआ। 'गाथा अमरबेल की' सन ् 2000 में 'नेशनल पब्लिशिंग हाऊस' दिल्ली द्वारा प्रकाशित है और इसका अंग्रेजी अनुवाद 'A song of Amarbel' के नाम से है। 'मोरचे' उपन्यास सन ् 2006 में 'वाणी प्रकाशन' दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। इनके द्वारा लिखित कहानी संग्रह 'चिड़िया और चील' 1995 में 'पराग' प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित हुआ। इसका अंग्रेजी अनुवाद 'Sparrow and the Kite' के नाम से हुआ। सुषम बेदी द्वारा लिखित कविता संग्रह 'शब्दों की खिडकियाँ' सन् 2006 में हुआ।

सुषम बेदी का कथा–साहित्य पश्चिमी समाज के गतिसंकुल परिवेश का प्रामाणिक अनुभव चित्र है। लेखिका अपने व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा नैतिक मूल्यों की टकराहट अभिव्यक्त करती हुई व्यापक आयाम प्रदान करती है। वे सामाजिक यथार्थ की आलोचना करके मूल्यगत विसंगतियों पर प्रहार करती है, सामाजिक, धार्मिक विद्रूपताओं को उभारती है और साथ ही भग्नाकांक्षा के

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

बीच यत्र–तत्र स्वरित आस्था के स्वर को रूपायित करती हैं। आधुनिक जीवन में समझौते की यंत्रणा, व्यवसायिकता, स्वत्व चेतना तथा अहममन्यता आदि के प्रभुत्व के कारण संबंधों में क्षीण होती आत्मीयता तथा उभरते तनाव एवं अलगाव का पीड़ा बोध, नवीन संस्कृति की छाया से प्रभावित, देह की राजनीति बनते प्रेम–संबंध नारी जीवन में नए और पुराने मूल्यों के द्वन्द्व से उत्पन्न दोहरे संघर्ष में जकड़ी नैतिकता तथा भ्रष्टाचार की विद्रूप कुत्सित विकृत्तियों आदि की संयोजनाएं कथाओं में मूल्य द्वन्द्व और मूल्य ह्रास को साथ–साथ उजागर करती चलती हैं।[8]

प्रवासी भारतीय अनुभव करते हैं कि बेगानी धरती पर वे बहिष्कृत हैं तथा वे समाज के नियमों–उपनियमों व परमपराओं को प्रभावित करने में नितान्त असमर्थ हैं इसलिए वे स्वयं को अर्थहीन व आत्मनिर्वासित महसूस करते हैं। सुषम बेदी जी ने अलगाव को अनेक रूपों में चित्रित किया है–

अकेले आदमी का अलगाव समाज में रहते हुए व्यक्ति के व्यवहार और मानसिकता से जुड़ी समस्या है। सुषम बेदी इस अलगाव को मानवीय नियति मानती है। प्रवासी व्यक्ति अपने अस्तित्व से ही अलगावग्रस्त हैं। **अस्तित्वगत अलगाव** के साथ साथ परिवेशगत अलगाव भी दृष्टिगत होता है। पात्रों की जटिल मानसिकता के पीछे उनकी विडम्बनापूर्ण स्थितियां हैं और इन स्थितियों के पीछे कारण भी परिवेशगत व स्थितिगत है। सुषम बेदी के कथा साहित्य में अधिकांश पात्र अलगाव ग्रस्त हैं व परिवेश से कटे हुए, प्रेम में असफल होने पर भी उससे जुड़े हुए,अपराध बोध से ग्रसित, प्रेम में व्यवसायीकरण को प्रश्रय देने वाले हैं। 'हवन' अपन्यास की गुड्डो शादीशुदा जुनेजा के साथ प्रेम सम्बन्ध को किसी बिन्दु पर न पहुंचा सकने के कारण अलगाव का शिकार हो जाती है–'मेरे भीतर ऐसा महसूस होता है कि पुरुष की नज़दीकी मुझे कमजोर,परनिर्भर और अकेला कर देगी––तुम तो अपने परिवार वालों के बीच लौट ही जाओगे–––तब इस रिश्ते का अर्थ ही क्या है––सिर्फ उदासी, तड़पन, मन का अपराध बोध–––।'[9] इसी उपन्यास की जूडी इस बात से अनजान है कि उसके भारतीय प्रेमी अरुण ने उसके साथ धोखा किया है। अरुण द्वारा कुछ न बताये जाने पर जूडी अलगाव महसूस करती है व गुड्डो से कहती है–'आइ डोंट अंडरस्टैण्ड इंडियन मैन। क्या अरुण सच में प्यार करता है मुझसे। पता नहीं डर क्यों लगता रहता है ––ऐसा लगता है कि कुछ है उसके ज़िन्दगी में जिससे मैं बिल्कुल बाहर हूं।'[10]

माता पिता के झगड़े में पिसते बच्चे भी अलगाव की स्थिति का शिकार बनते है। 'मोरचे' उपन्यास की पात्रा तनु जब अपने पति अनुज को छोड़ देती है तब इस बात का कुप्रभाव सबसे अधिक उसके बेटे गौरव पर पड़ता है। माता पिता में बंटा गौरव अलगाव महसूस करता है–'उसके चेहरे पर दो ही भाव रहते–चिढ़न भरा गुस्सा और उदासी। नानी पूछती क्या

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

खाएगा तो उसका जमा जमाया जवाब होता था–'आय एम नॉट हंगरी।'[11] गौरव को साम, दाम, दंड,भेद सभी तरह से समझाने की कोशिश की गई पर बच्चा मां की तरफदारी करने से टस से मस नहीं हुआ–'उसने वकील से साफ कहा था कि वह मां के पास ही रहना चाहता है और इस बात से अनुज इतना नाराज़ हुआ कि उसने उसने गौरव को ज़ोर से चांटे जड़े थे। गौरव का रूख फिर भी नहीं बदला।'[12]

पीढीगत अन्तर के शिकार बच्चे भी अलगाव को भोगते हैं। उसके माता पिता बच्चों की ख्वाहिशों ओर भावों को समझ नहीं पाते जिस कारण बच्चे निराशा का शिकार बन जाते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे परिवार से अलगावग्रस्त हो जाते हैं। यही स्थिति –चिड़िया और चील' कहानी की पात्रा चिडिया की लगती है कि उसके माता पिता उसकी भावनाओं को नहीं समझ पाते ––'अगर दिन में घर पर होती तो अपना कमरा बंद किये पड़ी रहती–––मम्मी के मिलने वाले आते तो लाख मिन्नत करने पर वह उन्हें हैलो करने बाहर आती फिर मिनट भर में वापस लौट किवाड़ बन्द कर लेती।'[13]

भौगोलिक विभिन्नता के साथ–साथ जीवन शैली, स्तर, विकास क्रम की विभिन्नता सांस्कृतिक अलगाव के कारणों में है। इसमें व्यक्ति एक जगह से टूटकर दूसरी जगह न जुड़ पाने के कारण रागात्मक सम्बन्ध नहीं स्थापित कर पाता। व्यक्ति अजनबी परिवेश, अजनबी स्थितियों और सांस्कृतिक विभेद के कारण अलगावग्रस्त होता है। सुषम बेदी के कथा–साहित्य के पात्र सांस्कृतिक अलगाव की स्थितियों को भोग रहे हैं। भारत के बाहर रहने के कारण वह देश अभी भी उनके मन–मस्तिष्क में मौजूद है, परन्तु उससे उसकी पहचान इतनी परे जा चुकी है कि 'अजनबी' सी लगती है। ये पात्र अलगावग्रस्त होने के साथ–साथ एक कटे हुए समाज के हिस्से भी हैं, जो अपनी पहचान तो रखते हैं किन्तु एक वंचित समाज के सदस्य के रूप में। प्रवासी भारतीयों की पहली पीढ़ी जब दो संस्कृतियों (पूर्व और पश्चिम) की टकराहट देखती है तो वह सालों से रह रहे इस देश में बेगानापन अनुभव करने लगती है। 'हवन' उपन्यास में राधिका का पश्चिमी संस्कृति की ओर बहुत ज्यादा आकर्षण है। उसके लिए भारतीय संस्कृति महत्वहीन है। वह अपनी संस्कृति से दूर रहना चाहती है। घर में जब भी कोई पूजा होती है तो वह उसमें केवल मजबूरीवश ही बैठती है। ''गुड्डो और गीता जब हवन–मंत्रो को गाती हैं, तो राधिका के लिए यहाँ बैठना एक सजा से कम नहीं होता। जिन बातों का उसका रोजमर्रा के जिंदगी से वास्ता नहीं, जिनका अर्थ तक वह नहीं समझती, उनको राधिका पर क्यों जबरदस्ती लादा जाता है? ममी–डैडी का मन रखने के लिए उसने गायत्री मंत्र सीख भी लिया है, कुछ भजनों की एकाध पंक्तियाँ भी आ गयी हैं, पर इस सब का मतलब क्या है! उसे

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

अच्छी लगती है तो बस चटकीली–चमकीली हवन की लपटें, सामग्री डालने से जब वे भड़कती हैं तो राधिका को इस खिलवाड़ में बहुत आनंद आता है।''[14]

'चिड़िया और चील' कहानी संग्रह में चिड़िया अकेली अलगावग्रस्त हैं उसे लगता है उसके माता–पिता भारतीय संस्कृति को उस पर थोपना चाहते हैं। वह अपनी संस्कृति से कटी हुई, अपने अन्धेरे में गुम हैं। आश्चर्य की बात यह है कि वह अपने अलगाव से छुटकारा नहीं पाना चाहती बल्कि इसमें ही सुरक्षित महसूस करती हैं। अपनी माँ की अपनी जिंदगी में दखल–अंदाजी बर्दाश्त न करती हुई कहती है, ''क्या तुम समझ पाओगी कि अकेले रहने की भी एक जरूरत होती है...कि माँ–बाप के साथ रहकर बच्चे का पूरा विकास नहीं होता...तुम्हारा जमाना, तुम्हारा देश बहुत फर्क था...क्या तुम्हें भरोसा नहीं होता कि मेरी दुनिया तुमसे बहुत अलग हो सकती है...।''[15] सुषम बेदी के कथा–साहित्य में सांस्कृतिक अलगाव के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश, सांस्कृतिक–विभेद, आपातकालीन स्थितियाँ और प्रवासीपन की समस्याएँ आदि विविध पक्ष परिगम्य हैं।

सांस्कृतिक अलगाव के साथ–साथ सामाजिक सम्बन्धगत अलगाव भी सुषम बेदी के कथा–साहित्य में चित्रित हुआ है। सम्बन्धगत अलगाव में पारिवारिक विघटन, पुरातन मान्यताओं का खण्डित होना, सम्बन्धों की जटिलता, उतरदायित्वहीनता की स्थिति, परम्परागत मूल्यों का नकार आदि लिए जा सकते हैं। आधुनिक जीवन की लेखिका होने के नाते सामाजिक सम्बन्धों के अन्तर्गत पारिवारिक और प्रेम सम्बन्धों में फैले अलगाव को अपने कथा–साहित्य में कुशलता से चित्रित किया है। इनके पात्रों में प्रवासी भारतीय समाज के पारिवारिक सम्बन्धों में भोगा हुआ यथार्थ, साथ–साथ रहते हुए भी जीने की विवशता, सम्बन्धों के प्रति लाचारी, पीढ़ीगत अंतर और अतीत के सम्बन्धों को भोगते पात्रों में अलगाव व्याप्त है। प्रवासी भारतीय परिवारों में दो पीढ़ियों में अन्तराल दिखाई देता है। युग संक्रमण और विघटन से वैयक्तिक स्वातन्त्रय चेतना का भाव घनीभूत हुआ, जिसमें माता–पिता व सन्तान के मध्य सम्बन्धों में तनाव व अलगाव का वातावरण पैदा हुआ। 'हवन' उपन्यास में राधिका और माता–पिता के बीच पीढ़ीगत अंतर के कारण अलगाव–ग्रस्तता है। अपने मन के भावों के विस्फोट को भीतर ही भीतर दबाती हुई राधिका कहती है, ''आई हेट हिम, आई हेट हिम।''[16]'चिड़िया और चील' कहानी संग्रह की 'चिड़िया और चील' कहानी में चिड़िया अपने ढंग से जीवन जीने के लिए घर से उड़ जाती है। प्रेमी द्वारा धोखा देने पर चिड़िया अपने रैनबसेरे में वापिस लौट आती है। वह अपने माता–पिता और रिश्तेदारों के प्रति अलगावग्रस्त हो जाती है–''लेकिन उस रौनक के बीच अंदर ही अंदर ममी को कुछ सालता रहता है...बत्तीस बरस की लड़की के घर लौटने पर वह खुश हो या रोये...वह यह भी जानती है कि चिड़िया

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

किसी भी पल उड़ने की फिराक में है...यह घर उसके लिए ऐसी सराय है जिसने उसे मुफ्त पनाह दी हुई है...क्या सच में ममी का इस्तेमाल किया जा रहा है ? चिड़िया को तो इस घर में किसी से कोई सरोकार नहीं...घर सच में सराय था।''[17]

प्रवासी भारतीय समाज में परिवार संबंधित अलगाव के अनेक सूत्र सुषम बेदी के कथा–साहित्य में मिलते हैं। बुजुर्गों की स्थिति इस समाज में गौण होती जा रही है। पश्चिमी समाज ने बुजुर्गों को अलगाव के सिवाय कुछ नहीं दिया है। उनके और बच्चों के बीच के रिश्ते ठंडे पड़ चुके हैं। बच्चे बुजुर्गों की भावनाओं से अवगत नहीं होना चाहते। फलस्वरूप बुजुर्ग बच्चों के प्रति अलगावग्रस्त हैं। दोनों पीढ़ियाँ अपने–अपने अहम् के कारण एक ही घर में रहते हुए अजनबी हैं। 'नाते' कहानी में अमेरिका आए बुजुर्ग दम्पति अपने बेटे–बहू के साथ रहते हुए भी अलगावग्रस्त हैं। बेटे–बहू के बनावटी व्यवहार के कारण वह भरे–पूरे परिवार में स्वयं को अकेला महसूस करते हैं। एक दिन वह पत्नी से कहता भी है–''अपनी इज्जत आदमी के अपने हाथ में होती है। तू तो वापस चलने का नाम ही नहीं लेती। चल, लौट चलें, क्यों अपने साथ मेरी दुर्गति करा रही है बच्चों के यहाँ!''[18] विजय 'लौटना' उपन्यास में इस कदर अपने बिजनेस में डूब चुका है कि उसके पास अपनी पत्नी मीरा के लिए समय ही नहीं है। मीरा पति के साथ अलगाव महसूस करती हुई स्वयं को महत्वहीन समझती है–''पर विजय को शायद यह नहीं पता कि मैं तो अभी से खुद को फालतू महसूस करने लगी हूँ। उसकी जिंदगी में भी और उसके समाज में भी। वहाँ मेरे लिए कोई जगह ही नहीं...''[19]

अमेरिका में वास कर रहे गौतम और दिव्या गाथा अमरबेल की उपन्यास में सास के कारण उनमें दूरियाँ बढ़ती जा रही हैं। दोनों पति–पत्नी एक साथ रहते हुए भी किसी–न–किसी कारण एक दूसरे से दूर रहते। गौतम सास–बहू में सन्तुलन बैठाने का प्रयत्न करता पर सफल नहीं हो पाता। जिस कारण वह दोनों रिश्तों को लेकर अलगाव महसूस करता है। उसका मन अब दोनों रिश्तों से मुक्ति चाहता है–''कभी–कभी गौतम का मन होता है कि वह बड़ी बेदर्दी से सारे धागे काट ले! सारे संबंध तोड़ दे और संन्यासी हो जाये। फालतू के मोहजाल में पड़ा कष्ट भोग रहा है। सच में मोह ही तो है उसके दुखों की जड़! अगर मोह ही काट दिया तो फिर माँ क्या और पत्नी क्या। पर क्या सच में कभी ऐसा कर पायेगा वह।''[20]

'मोरचे' उपन्यास में तनु अपने हिंसक पति अनुज के शोषण का शिकार है। दोनों में अलगाव की खाई है जिसे भरने का भरसक प्रयत्न केवल तनु ही करती है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए वह बच्चे की इच्छा रखती है तो वह बात को टालता हुआ कहता है, ''अभी जल्दी क्या है बच्चे पैदा करने की। आराम से रैजिडैंसी खत्म कर लो फिर देख लेना।''[21] अनुज की हिंसक प्रवृति दिनों–दिन बढ़ती जा रही थी। बच्चा होने पर भी उसमें कोई परिवर्तन

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

नहीं आया था। वह घर से बाहर अन्य औरतों से संबंध रखता। परिवार से उसका कोई सरोकार नहीं था। यहाँ तक कि अनुज तलाक लेकर अलग होना चाहता है। तलाक की सुनवाई के दौरान तनु अनुज की अंग्रेज गर्लफ्रैंड को देखती है तो सोचती है, ''कैसा रिश्ता होगा इन दोनों के बीच! क्या अनुज इस लड़की को प्यार करने की बात कहता होगा या यूँ ही तफरीह के लिए साथ रखा हुआ है। क्या कोई गहरी आत्मीयता हो सकती है इनके बीच! ———भीतर घुसने का स्वभाव नहीं है। डूबना नहीं चाहता वह। बस सतह पर तैरना उसे पसंद है। लड़की को बता देना चाहिए कि अनुज सिर्फ खिलवाड़ कर रहा है उसके साथ। प्यार–प्यार नहीं है उसे किसी से।''[22] इस प्रकार स्पष्ट है कि सुषम बेदी के अधिकांश पात्र पारिवारिक अलगाव को झेलते हैं। इस अलगाव को दूर करने की छटपटाहट भी उनमें दिखाई देती है।

प्रवासी भारतीयों में प्रेम सम्बन्धों में उत्पन्न अलगाव का सूक्ष्म एवं जटिल रूप सुषम बेदी के कथा–साहित्य में उभरा है। प्रेम सम्बन्धों के अलगाव में अधिकतर सम्बन्धगत, मूल्यगत दुख की स्थितियाँ हैं। 'हवन' उपन्यास में गुड्डो और जुनेजा का प्रेम संबंध अकसर ही गुड्डो को अकेला कर देता है। वह डॉ. जुनेजा से कहती है, ''हम एक–दूसरे से शादी तो नहीं कर सकते। मैं विधवा हूँ, अकेली हूँ, इसलिए क्या तरस खाते हैं मुझ पर?''[23]'मोरचे' उपन्यास में मीरा और अनुज के प्रेम में आत्मीयता नाम की कोई चीज नहीं है। मीरा अपने प्रेम में सार्थकता लाने का भरसक प्रयत्न करती है किन्तु सफल नहीं हो पाती। शारीरिक और मानसिक तौर पर अनुज को समर्पित होने के बावजूद भी वह अनुज के साथ अलगाव महसूस करती है । इसका कारण अनुज का मीरा के प्रति सम्पूर्ण समर्पण न होना है–''उससे शारीरिक रिश्ता स्थापित करने के बावजूद अनुज दूसरी लड़कियों में पूरी रूचि लेता था। अकसर तनु उसे अर्चना और रीता से घलघुल कर बातें करते देखती तो हैरान होती थी। जहाँ उसका अपना मन हर पल अनुज की चाह करता रहता वहाँ अनुज की आँख या बर्ताव में उसे वैसी चाह न दीखती। तनु परेशान हो जाती। क्यों है ऐसा ? क्या अनुज उससे खेल रहा है, प्यार नहीं करता ? पर अनुज जब भी उसे ऐसी मनः स्थिति में पाता, प्यार से, बातों से, समझा बुझा कर उसकी सारी शंका निकाल देता और वह यह विश्वास फिर से मन में पाल लेती कि प्यार तो वह उसी से करता है।''[24]

'नवाभूम की रसकथा' उपन्यास में अपनी संदेह वृति के कारण आदित्य अपने और केतकी के बीच चल रहे प्रेम संबंध में अलगाव अनुभव करने लगा था। उसका केतकी पर से विश्वास उठने लगा था और इस अविश्वास का कोई ठोस आधार नहीं था–''पर बहुत भीतर, बहुत गहरे कहीं उसका मन पूरी तरह आश्वस्त न होता था। या आश्वासन अस्थायी ही होता था

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

और जरा से भी झटके से उखड़ जाता था।''[25] केतकी भी बहुत कोशिशों के बावजूद भी वह आदित्य को अपने सच्चे प्रेम का इजहार नहीं करा पा रही थी। दोनों के बीच का अलगाव दिनों–दिन बढ़ता जा रहा था। केतकी के समझाने पर भी वह समझता नहीं और कहता है, ''देखो केतकी हर इंसानी रिश्ते की कुछ न कुछ शर्तें होती हैं। वे चाहे प्रकट हों या अप्रकट होती जरूर हैं। एक बच्चे और माँ के रिश्ते में भी शर्तें होती हैं। बच्चा माँ को मुस्कान तभी देता है जब माँ उसे दूध देती है। लेन–देन का हिसाब हर रिश्ते में है। तुम अगर दूसरे पुरूषों के साथ रिश्ता रखना चाहती हो तो हम यह मानकर चलेंगे कि हमारा रिश्ता कोई एक्सक्लूजिव नहीं है जैसे तुम्हारे और मित्र हैं वैसे ही मैं हूँ।''[26] प्रेम में अनिश्चितता, अविश्वास आदि प्रेम को निरर्थक बना देते हैं। यही वृत्तियाँ मनुष्य को प्रेम में कमजोर बनाती हैं। प्रेमियों में दृढ़ निश्चय की कमी, प्रगाढ़ता का अभाव आदि अलगाव का कारण बनते हैं।

हिन्दी साहित्य लेखन में जानी पहचानी लेखिका सुषम बेदी ने मूल्य द्वन्द्व और मूल्य ह्रास को व्यक्तिगत अनुभवों द्वारा अनुभूत करके रचनात्मकता को व्यापक आयाम प्रदान किया है। इनका कथा–साहित्य पश्चिमी समाज के गतिसंकुल परिवेश का प्रामाणिक चित्र है। भौगोलिक विभिन्नता के साथ–साथ जीवन शैली, स्तर, विकास क्रम में भी विभिन्नता दृष्टिगत होती है जिसके कारण अस्तित्वगत अलगाव, परिवेशगत अलगाव के साथ–साथ सांस्कृतिक अलगाव यथा अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश, सांस्कृतिक–विभेद, आपातकालीन स्थितियाँ और प्रवासीपन की समस्याएँ आदि ,सम्बन्धगत अलगाव यथा पारिवारिक विघटन, पुरातन मान्यताओं का खण्डन, सम्बन्धों की जटिलता, उतरदायित्वहीनता की स्थिति, परम्परागत मूल्यों का नकार आदि, पारिवारिक और प्रेम सम्बन्धों में फैला अलगाव यथा जीने की विवशता, सम्बन्धों के प्रति लाचारी, पीढ़ीगत अंतर और अतीत के सम्बन्धों को भोगते पात्रों में अलगाव आदि की स्थितियां पनपती हैं जिसका प्रभावशाली प्रतिपादन अलगाव के सूक्ष्म एवं जटिल रूप में सुषम बेदी के कथा–साहित्य में उभरा है।

सन्दर्भ ग्रन्थः–

1 केदारनाथ रामनाथ, पाश्चात्य दर्शन का समस्यामूलक विवेचन, केदारनाथ, रामनाथ कॉलेज रोड, मेरठ, 2000,पृ 78।

2 बैज नाथ सिंघल, अलगाव दर्शन और साहित्य ,पृ 192।

3 लालचंद्र गुप्त 'मंगल,अस्तित्ववाद और नयी कहानी, शोध प्रबंध प्रकाशन, दिल्ली, 1975,पृ 71।

4 देवेन्द्र इस्सर,साहित्य और आधुनिक युग बोध,पृ 19।

5 शिव प्रसाद सिंह, आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद, विभू प्रकाशन, साहिबाबाद,1973,पृ 83।

6 हृदय नारायण मिश्र, समकालीन दार्शनिक चिन्तन, किताबघर, कानपुर, 1966,पृ 107।

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

7 आशा गुप्ता, नवम् दशक की हिन्दी महिला कथाकारों की नारी–चेतना,कान्त पब्लिकेशन्स, 124, चन्द्रलोक एन्चलेव,दिल्ली,2001,पृ 176।

8 कामता कमलेश, सागर पार भारतीय संस्कृति और हिन्दी, समीक्षा पब्लिकेशन्स,दिल्ली–110031, 2007,पृ 209।

9 सुषम बेदी, हवन, अभिरूचि प्रकाशन, 3/14 शाहदरा, 1996, पृ 78।

10 वही पृ 107–08।

11 सुषम बेदी, मोरचे, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज नई दिल्ली, 2006,पृ 107–08।

12 वही पृ 187।

13 सुषम बेदी, चिड़िया और चील, अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली,1997,पृ 40।

14 सुषम बेदी, हवन, अभिरूचि प्रकाशन, 3/14 शाहदरा, 1996,पृ ।

15 सुषम बेदी, चिड़िया और चील, अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली–32 1997,पृ 103–04।

16 सुषम बेदी, हवन, अभिरूचि प्रकाशन, 3/14 शाहदरा, 1996,पृ 52 ।

17 सुषम बेदी, चिड़िया और चील, अभिरूचि प्रकाशन, दिल्ली–32 1997,पृ 46।

18 वही,पृ।

19 सुषम बेदी, लौटना, पराग प्रकाशन, दिल्ली,1997,

20 सुषम बेदी, गाथा अमरबेल की,नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2/35, अंसारी रोड, दरियागंज,

नई दिल्ली, (1997)पृ 336।

21 सुषम बेदी, मोरचे, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज नई दिल्ली, (2006),पृ 59।

22 वही पृ 107।

23 सुषम बेदी, हवन, अभिरूचि प्रकाशन, 3/14 शाहदरा, (1996),पृ 77 ।

24 सुषम बेदी, मोरचे, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज नई दिल्ली, (2006),पृ 120।

25 सुषम बेदी, नवाभूम की रसकथा, नैशनल पब्लिशिंग हाऊस, 2/35, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली, (2002),पृ 176।

26 वही,पृ 195।

Net Links :-

1 www.columbia.edu/~sb12/

2 https://en.wikipedia.org/.../Susham_Bedi

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

3 www.pratilipi.com/susham-bedi

4 www.indicine.com/name/susham-bedi

5 https://www.linkedin.com/.../susham-bedi

6 www.meetme.com/member/21701233

7 www.bharatdarshan.co.nz/BD-static/.../japan-hindi-conference.html